

दुर्गे दुर्घट भारी: माँ दुर्गा को मराठी आरती

पद 1

दुर्गे दुर्घट भारी तुजविण संसारी।
अनाथनाथे अंबे करुणा विस्तारी।
वारी वारी जन्म मरणांते वारी।
हारी पडलो आता संकट निवारी॥

टेक (धृपद)

जय देवी जय देवी महिषासुरमथिनी।
सुरवर ईश्वर वरदे तारक संजीवनी॥

पद 2

त्रिभुवन भुवनी पाहता तुज ऐसी नाही।
चारी श्रमले परंतु न बोलवे काही।
साही विवाद करिता पडले प्रवाही।
ते तू भक्तांलागी पावसि लवलाही॥

पद 3

प्रसन्नवदने प्रसन्न होसी निजदासा।
क्लेशांपासुनि सोडवि तोडी भवपाशा।
अंबे तुजवाचून कोण पुरविल आशा।
नरहरि तल्लिन झाला पदपंकजलेशा॥

अर्थ, स्रोत और दूसरी आरती-चालीसा: sanatanbodh.in/stotra/durge-durghat-bhari/